बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक बुद्धि तथा मूल्य पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Kajal Singh

En. – 2300904

Under the Supervision of

Prof. /Dr. Girish Kumar Dwivedi

Faculty of EDUCATION

School of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Kajal

School of Education

Certificate

मैं एतद्द्वारा घोषणा करती हूँ कि संक्षिप्त सारांश **"बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक बुद्धि तथा मूल्य पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन"** शैक्षणिक वर्ष 2023 के दौरान उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के शिक्षा संकाय के अंतर्गत डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (शिक्षा) की उपाधि की आवश्यकता की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी के पर्यवेक्षण में किए गए मूल कार्य का एक प्रामाणिक अभिलेख है और इसे किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में डिग्री या डिप्लोमा के लिए पूर्णतः या आंशिक रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह प्रमाणित किया जाता है कि संक्षिप्त सारांश साहित्यिक चोरी से मुक्त है और रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी गई है।

Kajal Singh
(Signature)
(Kajal Singh)
(En. No.2300904)

(Signature)
(Dr. Girish Kumar Dwivedi)
Faculty of Education

21.07.2025
(Signature)
(Prof. P.K. Astalin)
(Director of School of Education)

24.07.25
(Signature)
(Prof. P.K. Pandey)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

सारांश

शिक्षा प्रक्रिया में संवेगों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। संवेगों का उचित प्रयोग करके अध्यापक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकता है। मानसिक रूप से स्वस्थ्य बालक ज्ञानार्जन के लिए तत्पर होते हैं तथा ये शीघ्रता, सरलता, सहजता व सुगमता से सीख सकते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ्य बालक का अभिप्रेरित व्यवहार उसके सामान्य व्यवहार की तुलना में अधिक प्रबल होता है, अर्थात् मानसिक रूप से स्वस्थ्य प्राणी अधिक उत्तेजित, अधिक क्रियाशील तथा अधिक उर्जित होता है। संवेगात्मक बुद्धि वह अभियोग्यता है जो संवेगों का अभिज्ञान व संवेगों को व्यवस्थित करती है। यह व्यक्तिगत कुशलता की जो भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न मात्रा में पायी जाती है, इसकी भिन्न–भिन्न मात्रा व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है। शैक्षिक समायोजन हेतु व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं, अनेक संवेग अधिगम में परिवर्तनों व व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित करते हैं। अधिक संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति कम संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति की तुलना में व्यवहार परिवर्तन करने में अधिक सफल होते है। शिक्षा के सभी स्तर के शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बालक के संवेगात्मक विकास को समझते हुए उनके सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दें। मूल्य व्यक्ति के आचरण का निर्धारण करते हैं एवं प्राथमिकताओं को तय करते हैं तथा व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। व्यक्ति का आचरण इन्हीं मूल्यों से प्रेरित होता है। इन मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति के चारित्रिक विकास के साथ–साथ मूल्य समाज के उन्नयन की दिशा भी तय करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक व आर्थिक स्थिति भिन्न–भिन्न होती है एवं संवेगात्मक बुद्धि पर स्थानीय परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक के अन्दर यह क्षमता होगी कि वे संवेगों पर नियन्त्रण कर सके तो वह विषम परिस्थितियों में भावनात्मक संतुलन बनाये रखेगा एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायेगा। जिससे वह अपनी भावनाओं का अपने मित्रों और सहकर्मियों के साथ सफलता पूर्वक अदान प्रदान कर सकेगा एवं बालकों के साथ समुचित व्यवहार कर सकेगा। इससे बालकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा तथा शिक्षक अपने प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु संवेगों का अधिक सृजनात्मक उपयोग करने की क्षमता का विकास कर सकेगा। अतः इस क्षेत्र में शोध की आवश्यकता है।

वर्तमान शोध कार्योत्तर अनुसंधान के अन्तर्गत आता है एवं शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को अपनाया जायेगा। प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।शोध हेतु

प्रयागराज जनपद में स्थित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों से यादृच्छिक विधि द्वारा उपयुक्त एवं यथोचित आकार में न्यादर्श का चयन किया जायेगा । प्रदत्तों के संकलन हेतु उपकरण के रुप में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. **डॉ0 के0एस0 मिश्र** द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण।
2. **डॉ0 एस0पी0 गुप्ता** द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण।
3. **सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी– स्व–निर्मित।**
4. **अरुण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता** द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बैटरी।

मुख्य शब्द – संवेगात्मक बुद्धि, मूल्य, सामाजिक–आर्थिक स्तर, मानसिक स्वास्थ्य एवं बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों

Kajal

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	6-7
2	Literature Review	7-9
3	Description Broad Area	9-10
4	Objectives of the Study	11-11
5	Research Methodology	12-13
6	Expected Outcome of the Research	13
	References	
	Plagiarism Report	

Kajal

प्रस्तावना

व्यक्ति किन्ही विशेष व्यवहारों को अधिक सहजता एवं शीघ्रता से क्यों करता है? ये मनोवैज्ञानिकों के लिये सदैव चुनौतीपूर्ण रहा है। मनोवैज्ञानिक मैकडूगल ने मूल प्रवृत्तियों के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार को स्पष्ट करने का प्रयास किया। परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिक मूल प्रवृत्ति को व्यवहार का कारण स्वीकार नहीं करते। इनके अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ किसी जाति विशेष के व्यवहार प्रतिमानो को व्यक्त करती है जो जाति विशेष के समस्त सदस्यों में विद्यमान होती है। ये मूल प्रवृत्तियाँ प्राणी के प्रायः दैहिक व संवेगात्मक पक्षों से सम्बन्धित व्यवहारों को संचालित करने में तो भूमिका का निर्वहन करती हैं, परन्तु संवेगात्मक एवं सामाजिक पक्षों से सम्बन्धित व्यवहारों में इनकी अल्प भूमिका ही होती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्राणी के विभिन्न व्यवहारों को संचालित, निर्देशित एवं संगठित करने वाली मुख्य शक्ति संवेगात्मक है। प्राणियों के द्वारा किये जाने वाले विभिन्न व्यवहारों को समझने तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करने में संवेगात्मकता का ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण व सार्थक सहायता प्रदान कर सकता है। संवेग एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणि के व्यवहार के निर्धारण एवं संचालन से सम्बन्ध रखती है तथा व्यक्ति का व्यवहार ही उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करता है एवं व्यवहार संवेगो की उपस्थिति से प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिकों ने 14 प्रकार के संवेग बताये हैं। भय, क्रोध, वात्सल्य, घृणा, करुणा, आश्चर्य, आत्महीनता, आत्मविश्वास, एकाकीपन, कामुकता, भूख अधिकार भावना, कृतिभाव एवं अमोद। मानव जीवन में संवेगों का अत्यधिक महत्व है। यदि संवेगों का विकास संतुलित रुप से नहीं होता है, तो व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विघटित हो जाता है और मानव व्यक्तित्व में अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो जाती है। संवेगों के प्रबन्धन से ही व्यक्ति में निर्माण तथा ध्वंस की भावनायें उत्पन्न होती है। हरलॉक के अनुसार सांवेगिक वातावरण का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर पड़ता है।

प्रत्येक व्यक्ति में संवेगों का स्तर भिन्न–भिन्न होता है, जो उनमें व्यक्तिगत भिन्नता उत्पन्न करता है। सांवेगिक बुद्धिमान व्यक्ति अपने संवेगों को नियंत्रित कर अपने व्यक्तित्व को संतुलित व समायोजित करता है तथा समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सांवेगिक बुद्धिमान व्यक्ति के व्यक्तित्व के गुणों को पहचाना जाये ताकि शिक्षक तथा अभिभावक प्रशिक्षणार्थियों के संवेगों को समझकर उनके सावेंगिक विकास में सहायक सिद्ध हो सके। प्रशिक्षणार्थी परस्पर एक–दूसरे के संवेगों को समझकर समुचित समायोजन कर सके। स्टीव हीन के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को महसूस करने उपयोग करने सम्प्रेषित करने

Kajal

पहचानने स्मरण करने उनसे सीखने उनका प्रबन्धन करने व समझने की जन्मजात क्षमता है।''

जिस प्रकार मानव–जीवन में संवेगों का महत्त्व है, उसी प्रकार मूल्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। समाज के नियम, आदर्श अथवा मानदण्ड जब व्यक्ति अन्तःकरण से विश्वास के रुप में स्वीकार करता है तो उन्हें मूल्य की संज्ञा दी जाती है। वर्तमान में हम मूल्यों के क्षरण की स्थिति से गुजर रहे हैं। वस्तुतः हमारी जीवन शैली, भ्रष्टाचार, मिथ्याचार, शोषण आदि के कारण असन्तोष व निराशा भरी है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास, शिक्षा प्रणाली की संरचना, औद्योगिक सभ्यता के उदय एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के विकास के परिणाम स्वरुप व्यक्ति में लालच संकीर्णता, स्वार्थपरता, संवेदनहीनता एवं विलासिता की वृद्धि हुई एवं व्यक्ति तथा समाज का नैतिक पतन हुआ। सर्वत्र मूल्यों के क्षरण एवं ह्रास के कारण विश्व के समक्ष अनेक नवीन संकट उत्पन्न हो गये हैं। वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिये मूल्य शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

व्यक्ति को व्यक्तित्व के विकास में उसकी सांवेगिक बुद्धि व मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। व्यक्तित्व के दोनो ही पक्ष व्यक्ति की सामाजिक व आर्थिक स्तर से अछूते नहीं रहते, व्यक्ति का सामाजिक व आर्थिक स्तर व्यक्तित्व के इन पक्षों को सकरात्मक व नकरात्मक दोनों ही प्रकार से प्रभावित कर सकता है। सामाजिक व्यक्ति दूसरों की भावनाओं के अनुसार अपने संवेगों को नियंत्रित करता है। इसी प्रकार निम्न आर्थिक स्तर के व्यक्ति के मूल्य अधिकतर मध्यम व उच्च्य व्यक्ति के मूल्यों से परस्पर भिन्न होते हैं।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

मरे (1948) ने अपने अध्ययन में पाया कि मानसिक स्वास्थ्य में व्यक्तिगत विभेद पाया जाता है। **एटकिंसन** ने अपने अध्ययन में पाया कि मानसिक स्वास्थ्य सफलता प्राप्त करने तथा उपलब्धि के लिए स्थायी वृत्ति है। इसके साथ –साथ शिक्षा जीवन के उद्देश्यों तथा मूल्यों का भी निर्धारण करती है। **प्रकाश वी (1986)** ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्ति का सामाजिक–आर्थिक स्तर उसकी बुद्धि तथा उत्साह को प्रभावित करता है। **बदगुजर (1992)** के अनुसार विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य भिन्न–भिन्न होते हैं। **मैक्डीलैन्ड** (1998) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च्य संवेगात्मक बुद्धि वाले तथा औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के आत्म–विश्वास में परस्पर भिन्नता होती है। इस प्रकार शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि से विद्यार्थी का व्यक्तित्व प्रभावित होता **है। बैरन (2001)** के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करती है। **मैक्कार्थी (2001)** ने भी अपने

Kajal

अध्ययन में पाया कि शिक्षण में सफलता के लिए संवेगात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण कारक है। **सुषमा पाण्डेय (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि मूल्य व्यवस्थापन में शिक्षक समाज तथा अन्य कारक उत्तरदायी हैं। जिस प्रकार विद्यार्थियों के मूल्यों पर उनके सामाजिक –आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है। उसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि भी सामाजिक आर्थिक स्तर से प्रभावित होती है। **बासु, सारा (2011).** ने ''ए स्टडी ऑफ मेण्टल हेल्थ एण्ड जॉब सैटिसफैक्शन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स'' नामक विषय पर अध्ययन किया गया। निष्कर्ष के रूप में प्राप्त किया गया –

1. माध्यमिक प्रशिक्षणार्थियों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य–सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया।
2. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। कार्य से सन्तुष्ट शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य अपने असंतुष्ट सहकर्मियों की अपेक्षा अच्छा था।

बी.एस. एवं एडविन (2013) ने ''मेन्टल हेल्थ स्टेट्स ऑफ टीचर एजुकेटर्स'' नामक विषय पर अध्ययन किया। उद्देश्य के रूप में शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य प्रशिक्षणार्थियों को जानना था। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में तमिलनाडु के चार जनपदों के विभिन्न कालेजों से 300 शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया। उपकरण के रूप में डा0 आर0 मुकुदंन एवं के0 एस0 शिव कुमार द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया गया। इस शोध से निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता को निम्नलिखित परिणाम मिले–

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उच्च स्तर होता है।
2. लिंग के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. आयु, कॉलेज के प्रकार, शिक्षण अनुभव, कॉलेज वातावरण तथा मासिक आय का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव परिलक्षित होता है।

शिक्षा मनुष्य को सफल जीवन जीने की कला प्रदान करती है एवं सीखने में मानसिक स्वास्थ्य का अत्यधिक महत्त्व है। **कुमारी, निधि (2021)** ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन तथा संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की संवेगात्मक बुद्धि में समानता है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि व्यक्ति के सामाजिक– आर्थिक स्तर का प्रभाव

Kajal

उसके व्यक्तित्व के प्रत्येक पक्ष पर पड़ता है। यदि शिक्षक विभिन्न स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संवेगात्मक विकास तथा मूल्यों को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करता है तो प्रशिक्षणार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है। इसलिए इस क्षेत्र में शोध कार्य करने की आवश्कता है। अतः शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक – आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य , सांवेगिक बुद्धि तथा मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है।

विस्तृत क्षेत्र का वर्णन

प्रत्येक व्यक्ति के शीलगुण एवं मूल्यों में परस्पर भिन्नता होती है। भूमण्डलीकरण के इस युग में परिवर्तन समय की मॉग है। सम्पूर्ण विश्व तेजी से आधुनिकीकरण की इस मैराथन दौड़ में शामिल है। आधुनिकीकरण के इस युग में सभी व्यक्तियों के लिये समान शिक्षा की व्यवस्था करना अनुचित प्रतीत होता है। अतः ये आवश्यक है कि शिक्षा की व्यवस्था व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर की जाये।

शिक्षा प्रक्रिया में संवेगों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। संवेगों का उचित प्रयोग करके अध्यापक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकता है। मानसिक रूप से स्वस्थ्य बालक ज्ञानार्जन के लिए तत्पर होते हैं तथा ये शीघ्रता, सरलता, सहजता व सुगमता से सीख सकते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ्य बालक का अभिप्रेरित व्यवहार उसके सामान्य व्यवहार की तुलना में अधिक प्रबल होता है, अर्थात् मानसिक रूप से स्वस्थ्य प्राणी अधिक उत्तेजित, अधिक क्रियाशील तथा अधिक उर्जित होता है। अभिप्रेरणा में व्यक्ति का व्यवहार लक्ष्य निर्देशित होता है। अतः उत्तम शैक्षिक उपलब्धि हेतु ये आवश्यक है कि प्रशिक्षणार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को समझकर उसके अनुसार शिक्षा की व्यवस्था की जाय। इसके साथ–साथ ये आवश्यक है कि हम प्रशिक्षणार्थी की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर को समझें क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को जानने व प्रभावपूर्ण ढंग, से प्रयोग करने की योग्यता है जो दूसरों के प्रति हमारे संबन्धों को सार्थक रुप से प्रभावित करती है। संवेगात्मक बुद्धि संवेगों के अवबोध, विचारों के संवेगात्मक सरलीकरण, संवेगात्मक समझदारी व संवेगात्मक प्रबन्धन की उपशाखाओं में विभाजित है। प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक व आर्थिक स्थिति भिन्न–भिन्न होती है एवं संवेगात्मक बुद्धि पर स्थानीय परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक के अन्दर यह क्षमता होगी कि वे संवेगों पर नियन्त्रण कर सके तो वह विषम परिस्थितियों में भावनात्मक संतुलन बनाये रखेगा एवं सकारात्मक

Kajal

दृष्टिकोण अपनायेगा। जिससे वह अपनी भावनाओं का अपने मित्रों और सहकर्मियों के साथ सफलता पूर्वक अदान प्रदान कर सकेगा एवं बालकों के साथ समुचित व्यवहार कर सकेगा। इससे बालकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा तथा शिक्षक अपने प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु संवेगों का अधिक सृजनात्मक उपयोग करने की क्षमता का विकास कर सकेगा। संवेगात्मक बुद्धि वह अभियोग्यता है जो संवेगों का अभिज्ञान व संवेगों को व्यवस्थित करती है। यह व्यक्तिगत कुशलता की जो भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न मात्रा में पायी जाती है, इसकी भिन्न–भिन्न मात्रा व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है। शैक्षिक समायोजन हेतु व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं, अनेक संवेग अधिगम में परिवर्तनों व व्यक्ति के सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित करते हैं। अधिक संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति कम संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति की तुलना में व्यवहार परिवर्तन करने में अधिक सफल होते है। शिक्षा के सभी स्तर के शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बालक के संवेगात्मक विकास को समझते हुए उनके सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दें। मूल्य व्यक्ति के आचरण का निर्धारण करते हैं एवं प्राथमिकताओं को तय करते हैं तथा व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। व्यक्ति का आचरण इन्हीं मूल्यों से प्रेरित होता है। इन मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति के चारित्रिक विकास के साथ–साथ मूल्य समाज के उन्नयन की दिशा भी तय करते हैं। देश में आज भी जनसंख्या का 8.08 प्रतिशत (जरनल ऑफ एजुकेशन रिसर्च के अनुसार) भाग जीवन की तमाम सुविधाओं से वंचित है। इस प्रशिक्षणार्थियों सुविधाओं हीन समाज के बच्चों को मूल्यों को समझना उन्हें पहचानना उनका संर्वधन करना आवश्यक है। अतः इस क्षेत्र में शोध की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्य :–

1. बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. बी0 एड प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक –आर्थिक स्तर वाले प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Kajal

5. बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर वाली छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. बी0 एड प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च –मध्यम व निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले छात्रों के मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च मध्यम व निम्न सामाजिक –आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. बी0 एड प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक –आर्थिक स्तर वाले प्रशिक्षणार्थियों के मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

वर्तमान शोध कार्योत्तर अनुसंन्धान के अन्तर्गत आता है एवं शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को अपनाया जायेगा।

1. **जनसंख्या** : प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।
2. **न्यादर्श** : प्रस्तुत शोध हेतु प्रयागराज जनपद में स्थित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों से यादृच्छिक विधि द्वारा उपयुक्त एवं यथोचित आकार में न्यादर्श का चयन किया जायेगा।
3. **शोध उपकरण** : प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु उपकरण के रुप में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।
   i. **डॉ0 के0एस0 मिश्र** द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण।
   ii. **डॉ0 एस0पी0 गुप्ता** द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण
   iii. **सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी– स्व–निर्मित**
   iv. **अरुण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता** द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बैटरी

4. **सांख्यिकी विधि** : प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि द्वारा किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों सांख्यिकीय के विश्लेषण तथा तुलनात्मक अध्ययन हेतु एनोवा , टी–परीक्षण, एवं उपयुक्त तथा प्रासंगिक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

Kajal

5. **प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :** प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त आंकड़े, सांख्यिकीय विधि से विश्लेषित किये जायेगें। प्राप्त आँकड़े, सांख्यिकीय विश्लेषण व पूर्ववर्ती शोधों के आधार पर निष्कर्षों का अर्थापन किया जायेगा।

सीमांकन

समय, धन तथा प्रतिदर्श की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोध–कार्य निम्नलिखित सीमाओं के अन्तर्गत सम्पादित किया जायेगा।

1. अध्ययन के लिये 'न्यादर्श हेतु प्रशिक्षणार्थियों का चयन उत्तर–प्रदेश में प्रयागराज जनपद तक सीमित किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में केवल संस्थागत बी0एड0 के द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों को ही सम्मिलित किया जायेगा।
3. शोध अध्ययन के परिणामों की वैधता व विश्वसनीयता का सामान्यीकरण प्रयागराज जनपद के बी0एड0 में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों के सन्दर्भ में किया जायेगा।

अपेक्षित परिणाम

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर वाले छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर संभावित है।
2. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर संभावित है।
3. बी0एड प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर वाले प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर संभावित है।
4. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर संभावित है।
5. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के उच्च मध्यम व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर वाली छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर संभावित है।
6. बी0एड प्रशिक्षणार्थियों के उच्च–मध्यम व निम्न सामाजिक – आर्थिक स्तर वाले प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर संभावित है।

Kajal

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Kajal Singh
Title	बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य ,संवेगात्मक बुद्धि तथा म मूल्य पर उनके सामाजिक -आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन
Paper/Submission ID	4082543
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-10 15:10:19
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Kajal